कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति

अध्याय - 6

लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट

भाग - 6

Satyaveer Yadav

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लोकसभा चुनाव (1977)

चुनाव से पहले :-

- जनवरी 1977 में चुनाव कराने का फैसला।
- सभी नेताओं और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को रिहा किया गया।
- आपातकाल लागू होने से पहले से ही विपक्षी पार्टियां एक दूसरे के नजदीक आ रही थी।
- चुनाव से ठीक पहले इन पार्टियों ने एकजुट हो जनता पार्टी के नाम से दल बनाया।
- नई पार्टी ने जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व स्वीकार किया।
- कांग्रेस कुछ नेता जो आपातकाल के खिलाफ थे, इस पार्टी में शामिल हुए।

ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1967 - भारतीय क्रांति दल - चौ॰ चरण सिंह

1969 - कांग्रेस (O) - डे॰ कामराज / मोरार जी देसाई

1971 - कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी - जगजीवन राम

1948 - सोशलिस्ट पार्टी - J.P. नारायण / नरेन्द्र देव / राममनोहर लोहिया

1951 - जनसंघ - डॉ॰ श्यामा प्रसाद मुखर्जी

23 जनवरी 1977 → जनता पार्टी

चुनाव चिह्न - हलधर

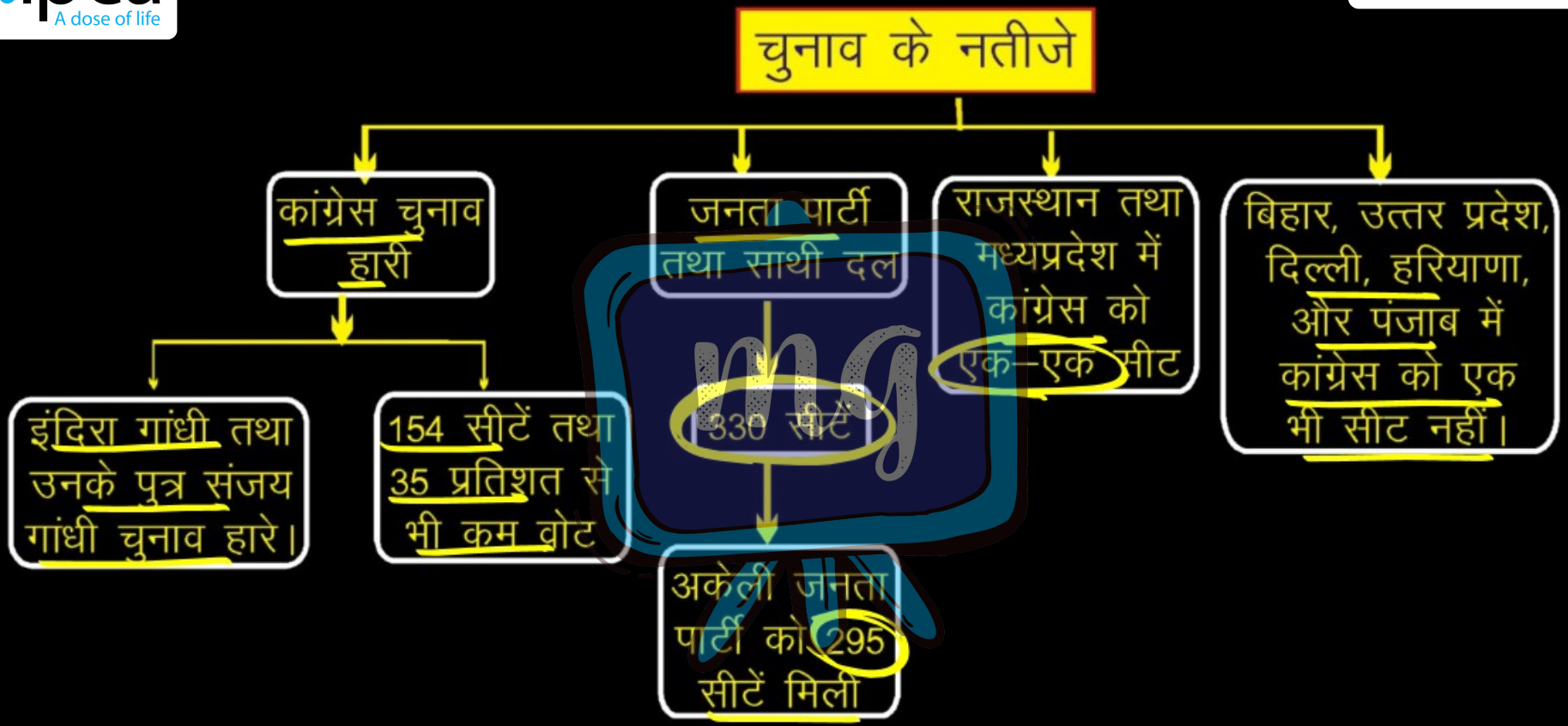
अध्यक्ष - मोरार जी देसाई



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

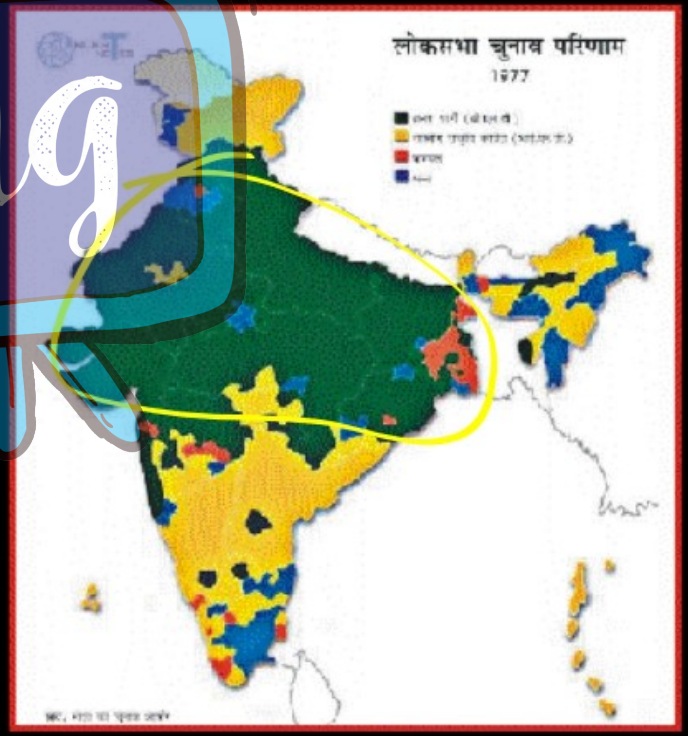
- कुछ अन्य नेताओं ने जगजीवन राम के नेतृत्व में एक नयी पार्टी बनायी - कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी
- 1977 के चुनावों को जनता पार्टी ने आपातकाल के ऊपर जनमत संग्रह का रूप दिया।
- इस पार्टी के चुनाव प्रचार में शासन के अलोकतांत्रिक चरित्र और आपातकाल के दौरान की गयी ज्यादातियों पर जोर दिया।


चुनाव के नतीजे
कांग्रेस चुनाव हारी
जनता पार्टी तथा साथी दल
राजस्थान तथा मध्यप्रदेश में कांग्रेस को एक–एक सीट
बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, और पंजाब में कांग्रेस को एक भी सीट नहीं।
इंदिरा गांधी तथा उनके पुत्र संजय गांधी चुनाव हारे।
154 सीटें तथा 35 प्रतिशत से भी कम वोट
330 सीटें
अकेली जनता पार्टी को 295 सीटें मिली

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कांग्रेस देश में हर जगह चुनाव नहीं हारी थी।
- दक्षिणी भारत के राज्यों में कांग्रेस विजयी हुई थी।
- महाराष्ट्र, गुजरात और उड़ीसा में कांग्रेस ने कई सीटों पर अपना कब्जा बरकरार रखा था।



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चुनाव परिणाम - कारण :-

- आपातकाल का प्रभाव हर राज्य पर एकसमान नहीं पड़ा था।
- लोगों को जबरन उजाड़ने और विस्थापित करने अथवा जवान नसबंदी करने का काम ज्यादातर उत्तर भारत के राज्यों में हुआ था।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जनता सरकार

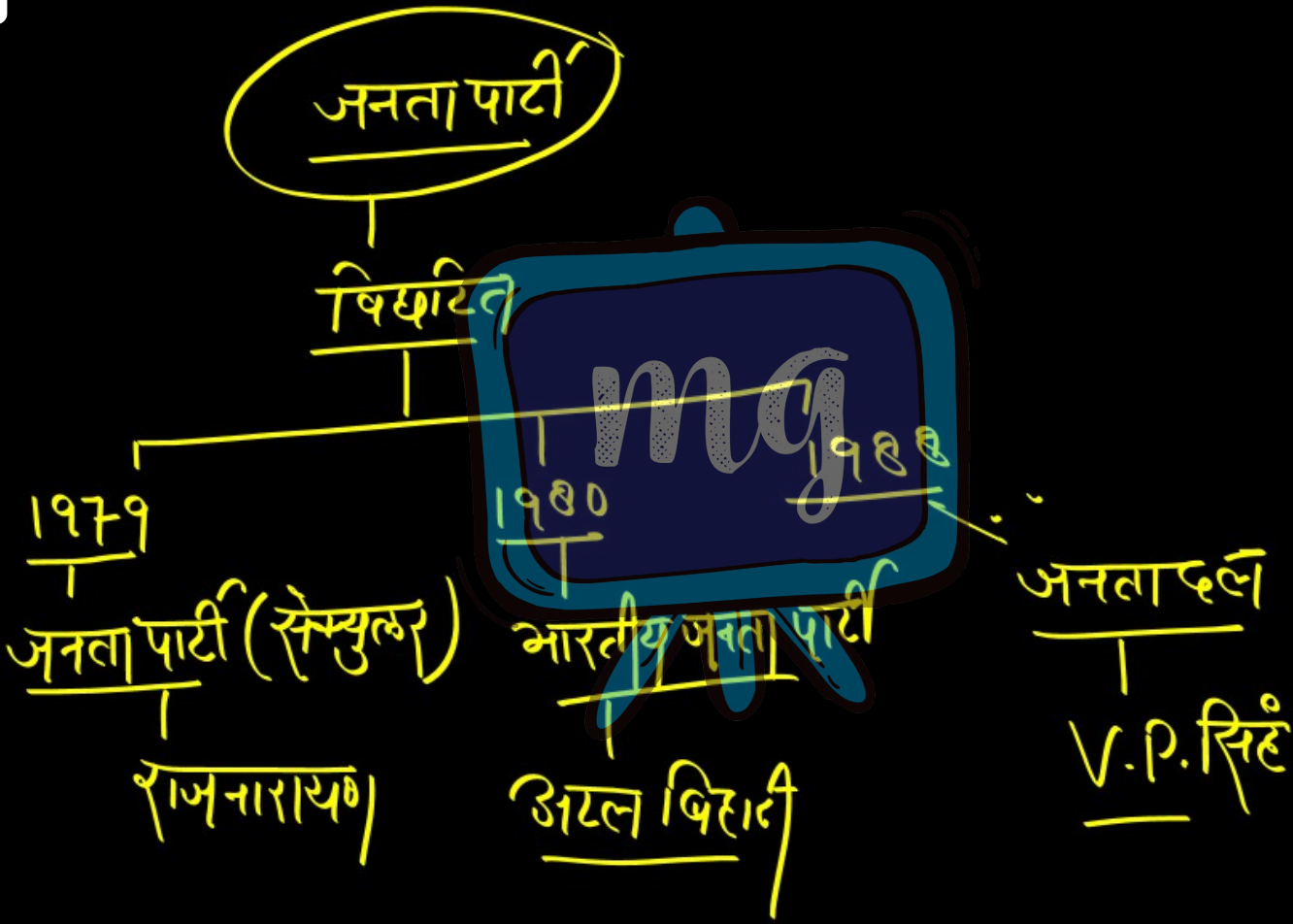
1977-79

- जनता पार्टी सरकार में कोई खास तालमेल नहीं
  - प्रधानमंत्री पद के लिए होड़
    - मोरारजी देसाई
      - 1966–67 से ही इंदिरा गांधी के प्रतिद्वंद्वी
    - चौधरी चरणसिंह
      - भारतीय लोकदल के प्रमुख उ.प्र. के किसान नेता
    - जग–जीवन राम
      - कांग्रेसी सरकारों में मंत्री पद पर रहने का विशाल अनुभव
- किसी दिशा नेतृत्व अथवा साझे कार्यक्रम का अभाव
  - कांग्रेस द्वारा अपनायी गई नीतियों में कोई बुनियादी बदलाव लाने में असफल
- 18 माह में मोरारजी देसाई की सरकार ने बहुमत खोया।
  - चौधरी चरण सिंह की सरकार कांग्रेस के समर्थन से
    - कांग्रेस ने समर्थन वापस लिया 4 माह में सरकार गिरी।

32 वर्ष

ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अब आगे :-

- जनवरी 1980 में लोकसभा के नए सिरे से चुनाव।
- जनता पार्टी को उत्तर भारत में मिली करारी शिकस्त।
- इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ने भारी सफलता हासिल की।
- 352 सीटों के साथ सत्ता में।

1977-1979 के लोकतांत्रिक राजनीति का सबक

- अगर सरकार अस्थिर हो और उसके भीतर कलह हो तो मतदाता ऐसी सरकार को कड़ा दण्ड देते हैं।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विरासत (1975-1980) :-

- कांग्रेस पार्टी एक नेता की लोकप्रियता पर निर्भर हुई।
- कांग्रेस की प्रकृति में आये बदलावों के मध्यनजर अन्य विपक्षी दल 'गैर-कांग्रेसवाद' की राजनीति की तरफ मुड़े।
- 1977 में लोकसभा के साथ-साथ उत्तर भारत के राज्यों में भी और गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं।
- उन सरकारों के बनने में पिछड़ी जाति के नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

25 जून
संविधान हत्या दिवस

- आपातकाल और उसके आसपास की अवधि को संवैधानिक संकट के रूप में भी देखा जा सकता है।
- संसद और न्यायपालिका का संघर्ष भी आपातकाल के मूल में।

राजनीति संकट के रूप में -

- सत्ताधारी पार्टी के पास पूर्ण बहुमत था फिर भी इसके नेतृत्व ने लोकतंत्र को ठप्प करने का फैसला किया।
- आपातकाल के दौरान प्राप्त संवैधानिक शक्तियों का दुरूपयोग हुआ।